ISBN NO. 978-93-81794-45-6

Scientific Research And Social Change

Author
Dr. (Smt.) Amita Chaturvedi

SCIENTIFIC RESEARCH AND SOCIAL CHANGE

Author:

Dr. (Smt.) Amita Chaturvedi

PUBLISHED BY
AJAY BOOK SERVICE
4658A/21, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi – 110002 (INDIA)
Ph : 011-23287655, 011-41500196
Website : www.ajaybookservice.com
E-Mail : asagarbh@yahoo.com

First Edition 2020

Price : 1480/-

ISBN : 978-93-81794-45-6

All rights reserved No. Part of this Publication may be Reproduced, Stored in a retrieval Systems, or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, recording without the prior permission of Publishers.

Laser Type Setting By:
Ramisha Computer & Printers
922, Jatwara Darya Ganj, Delhi-110002

H.S. Offset Printers
New Delhi - 110002

CONTRIBUTORS

Sanat Kumar Daheria, Deptt. of Sociology, Govt. Arts and Commerce College Keolari, Seoni M.P.

Smt. Pooram Thakur, Deptt. of English, Govt. P.G. College Seoni M.P.

Dr. Manoj Kumar Tembhre, Deptt. of English, Govt. Arts and Commerce College Keolari, Seoni M.P.

Anita Meshram, Department of Political Science, Govt. Chandra Vijay P.G. College, Dindori (M.P.)

Dr. R.K. Trivedi, Department of Commerce, J.S.T. Govt. P.G. College, Balaghat (M.P.)

Dr. Kanchan Meshram, Deptt. of Sociology, J.S.T. Govt. P.G. College Balaghat

Jyoti Suryavanshi, Deptt. of Sociology, Govt. Degree College, Amarwara Distt. Chhindwara M.P.

Tara Baraskar, Deptt. of Economics, Govt. Degree College, Multai Distt. Betul M.P.

Naseem Bano, Deptt. of Sociology, R.D. Govt. P.G. College Mandla M.P.

Dr. Kalpna Gupta, Deptt. of HomeScience, Govt. M.K.B. Women's College Jabalpur

Dr. Anjana Nema, Department of Home Science, Govt. Girls P.G. College, Sagar (M.P.)

C.S. Parastey, Deptt. Of History, Govt. Degree College Sahpura, Dist. Dindori M.P.

Preeti Wasnik, Deptt. of Sociology, Govt. College Lalbarra

CONTENTS

S.No	TITLE	Page No
1.	**Social Pedagogy of Classroom** Sanat Kumar Daheria	1
2.	**Reciprocal Learning Strategy** Smt. Pooram Thakur	2
3.	**Capacity Building Of Teachers And Performance Of The Learners** Dr. Manoj Kumar Tembhre	19
4.	**Human Rights Concerns In Elementary School Curriculum** Anita Meshram	28
5.	**Teacher Development And Quality Elementary Education** Dr. R.K. Trivedi	38
6.	**Eliminating Gedner Disparity Through Sarva Shiksha Abhiyan** Dr. Kanchan Meshram	55
7.	**Village Education Committees And Development Of Education** Jyoti Suryavanshi	67
8.	**Universalisation of Elementary Education** Tara Baraskar	74
9.	**Nurturing Value Education In Children Of Primary Schools: A Worthwhile Exercise** Naseem Bano	84
10.	**Impact of Spiritual Education on the Disabled Students** Dr. Kalpna Gupta	91
11.	**Balvikas : An Institute for Mental Retired Children** Dr. Anjana Nema	101

12. **Impact of Sarva Shiksha Abhiyan on the Achievement of the C.W.S.N. And Disabled Students** 109
C.S. Parastey

13. **Social Change and Human Development in India** 121
Preeti Wasnik

14. लघु वन उपज तेंदू पत्ता संकलन का संखिकीय विश्लेषण : मंडला जिले के विशेष सन्दर्भ में 126
डॉ. टी. एस. राय

15. प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं गोंड राजवंश का राजनैतिक इतिहास : एक विश्लेषण 133
डॉ. ज्योत्सना अग्रवाल

16. तेंदूपत्ता नीति के आर्थिक कियान्वयन का विश्लेषण अध्ययन "सिवनी जिले के विशेष सन्दर्भ में 140
डॉ. शाहिदा खान

17. हिंदी साहित्य एवं संत तुकाराम के हिन्दी अभंग 146
डॉ. एस. पी. धूमकेति

18. सामाजिक पर्यावरण एवं नक्सलवाद : एक अध्ययन 158
डॉ. रचना कोरी

19. शिक्षा के माध्यम से मानव संसाधन विकास 166
डॉ. जय सिंह उर्वेती

20. मोहना की धार्मिक स्थिति : मंदिर मूर्ति एवं पर्वोत्सव 174
डॉ. डी. आर. उईके

21. समाज के प्रति हमारे दायित्व : स्वच्छता के संदर्भ में 183
डॉ. एस. आर. बेलवंशी

22. अथर्ववेद मे अष्टांग आयुर्वेद निरूपण 187
डॉ. पी.एल. झारिया

23. **Today's Recent Trends Of Solvent In The Oxidation Kinetics Of Some Model Substrates** 194
Dr. Smt. Aruba Partete

24. **Metallurgical Behaviour Of Surface Modified Al-Si-Mg Alloy Using Friction Stir Processing** 207
Dr. Divya Daheriya

25. हिन्दी साहित्य एवं काव्य अंजुमन की परम्परा और जाबालिपुरम् 230
डॉ. ममता सांघी

26. **A Mathematical Eoq Inventory Model For Deteriorating Items With Exponentially Decreasing Demand And Shortages With Partial Backlogging** 235
Dr. A.K. Agarwal

27. **Study Of Atmospheric Aerosol Properties Using Direct Solar Radiation Measurement Made With A Multiple Wavelength Radiometer** 250
Dr. Pawan Wasnik

28. **Social Environment & Implications Of Regional Imbalance In Education** 255
Farjana Khan

29. **Sustanable Development And Regional Disparities In Socio Economic Development In India** 263
Ganesh Mantare

30. **Level and Trends of Status of Migrant women workers (Special reference to construction work in Jabalpur city)** 275
Dr. Dilip Dubey

31. **Level And Trends Of Regional Entrepreneurship And Panchayati Raj** 282
Dr. G.L. Jhariya

32. **Historical Analysis of Agrarian Expansion and Urban Growth** 294
Dr. Laxmi Bhandey

17

हिंदी साहित्य एवं संत तुकाराम के हिन्दी अभंग

डॉ. एस पी. [illegible]

हिन्दी [illegible]

रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय [illegible]

*तुकाराम के अभंगों की मूल प्रतियां अभी तक अनुपलब्ध है, किन्तु उनके सभी अभंग कंठ परंपरा से जीवित रहकर मौखिक रूप में आज भी **लोकप्रिय हैं। मराठी अभंगों** की संख्या अधिक है। हिन्दी अभंगों की संख्या **भी सम्भव है, बहुत रही होगी,** लेकिन महाराष्ट्र की भाषा मराठी होने के **कारण और उनके भक्त तुकाराम** की भाषा मराठी होने के कारण मराठी **अभंग अधिक उपलब्ध है। इनका** भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों ही विशेष **है। मराठी अभंग में जीवन, मृत्यु** आदि पर कई प्रश्न खड़े किए गए। **इनकी भाषा और भाव दोनों का** सुन्दर समन्वय इन अभंगों की विशेषता है **और इन्हीं विशेषताओं के कारण** ये अभंग दिव्य जीवन के दर्शन माने जाते **है।***

प्रास्ताविक :

मराठी साहित्य में **तुकाराम** का स्थान इतना ऊँचा है कि मराठी [illegible] की सुविख्यात कवयित्री **'बहनाबाई** चौधरी ने उन्हें वारकरी संप्रदाय के शिखर की उपमा दी। **एक ऐसा** शिखर जिसे अब तक किसी साहित्यकार के छूने की बात तो **दूर उसके** पास कोई फटक भी नहीं सका है। महाराष्ट्र के [illegible] अभावग्रस्त **ग्रामीण** इलाके के जीवट समाज में जीवन [illegible] आदिम प्रेरणा देने का **महनीय** और स्पृहणीय काम जिस ग्रंथ ने किया है उसका नाम है **तुकाराम की** गाथा । अपनी भाषिक क्षमता और अद्वितीय प्रतिभा के बल पर, **पंथ, धर्म,** जात–पाँत के भेदभाव के [illegible] तत्कालीन अनपढ़ अज्ञानी **समाज** का आत्मोन्नति का सच्चा मार्ग तुकाराम की गाथा ने दिखाया। **मराठी** भाषाभाषियों के सांस्कृतिक जीवन में तुकाराम का प्रभाव अद्वितीय है।

तुकाराम के काव्य पर मराठी समीक्षा में बहुत बड़ा काम हुआ है। हम [illegible] उनके हिंदी अभंगों को ध्यान में रखकर लिख रहे हैं। अतः उनकी सभी [illegible] साहित्यिक विशेषताओं को न्याय नहीं दे पाएँगे क्योंकि हमारे सामने मर्यादा है। तुकाराम की सभी साहित्यिक विशेषताओं को हिंदी अभंगों में स्थान नहीं [illegible] है। तुकाराम के हिंदी अभंग पढते समय पता नहीं क्यूँ ऐसा बार-बार महसूस होता है कि तुकाराम लिखते–लिखते रह गए। उनका हिंदी अभंगों में उतना दिल नहीं रमा जितना मराठी अभंग लिखते वक्त दृष्टिगोचर होता है। शायद यह मातृभाषा का परिणाम है। तुकाराम के हिंदी अभंग :

[illegible] उनकी कोई हस्तलिखित गाथा उपलब्ध नहीं है।) संत का [illegible] 1608–1660 का रहा है। तुकाराम के अदृश्य होने के पश्चात उनकी [illegible] हस्तलिखित प्रतियाँ गायब कर दी गयी। करीब–करीब सौ साल बाद [illegible] भक्त वारकरी त्रिंबक कासार जी ने चालीस साल के अथक [illegible] से गाँव–गाँव जाकर मौखिक रूप मे जीवित अभंगों को एकत्र कर [illegible] लिखित रूप दिया। मूल प्रत उपलब्ध न होने के कारण उनके अभंगों [illegible] के अनुसार क्रम लगाना कठिन है। इ.स.1869 को तुकाराम भक्त [illegible] अधिकारी सर अलेक्झाडर ग्रांट (पंढरपूर के डॉ. गोपाळराव देगारे द्वारा [illegible] तुकाराम गाथा में इस अधिकारी का नाम वाल्टर फ्रिअर बताया [illegible] है) ने 4500 अभंगों की गाथा प्रकाशित की। वह दोषयुक्त है फिर भी [illegible] इसे ही सबसे विश्वसनीय माना जाता है। इसी गाथा को आधार [illegible] महाराष्ट्र सरकार ने सन 1973 में एक आवृत्ति प्रकाशित की जिसमें 4644 अभंगों का समावेश किया है। अध्ययन के लिए हमने इसी आवृत्ति को [illegible] में लिया है। वारकरी सम्प्रदाय के अनेक भक्तों ने तुकाराम की गाथा [illegible] के साथ प्रस्तुत किया है। जिन्हें वारकरी संप्रदाय ने मान्यता [illegible] है। [illegible] उल्लेखनीय नाम है–जोग महाराज, साखरे महाराज, राजपूत [illegible] तुकाराम तात्या, माडगावकर, आदि तथा कुछ विद्वानों में शंकर [illegible] त्र्यंबक हरि आवटे, वि.ल.भावे आदि ने तुकाराम की गाथा [illegible] की है।

तुकाराम की शासकीय गाथा में हिंदी अभंगों की संख्या कुलमिलाकर [illegible] है। तुकाराम की जितनी भी गाथाएँ प्राप्त होती है उन सब गाथाओं में [illegible] के क्रम अलग–अलग है। श्री तुकारामबावाच्या अभंगांची गाथा' नामक महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रकाशित गाथा में 381 से 383 तक स्वामीस

सद्गुरूची कृपा जाली अभंग, 438 से 440 तक मुंढा अभंग, 441 डोईं फोडू अभंग, 442 मलंग अभंग, 443 दरवेस अभंग, 444 वैद्यगोळी अभंग, 1151 से 1172 तक उत्तराधिपदे, 1173 से 1202 तक साख्या या दोहरे तथा 3507 कान्होबा देवाशी भांडले ते अभंग, इसप्रकार से हिंदी अभंगों के क्रम निश्चित किए हैं।

संत तुकाराम की कविताओं में मानव जीवन की विविध भाव–भावनाओं को अभिव्यक्ति मिली है। मुलतः 'तुकाराम की अभंगों की रचना किर्तन के भाववेश में उत्स्फुर्त रूपसे तत्काल ही हुई होगी। ..... उनमें उनकी भाववृत्तियों, आशाओं, निराशाओं, मोहभंग के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान का **विशाल भंडार निहित** है। तुकाराम के अभंगों का अध्ययन करते समय **प्रत्येक अभंग को स्वतंत्र** रूप से देखना पडता है। तुकाराम की मातृभाषा **मराठी थी लेकिन उनके** द्वारा रचित हिंदी अभंगों के अध्ययन से पता चलता **है कि वे हिंदी भाषा के** भी ज्ञानी थे। उनके अभंगों का अध्ययन करने के **लिए अभंगों को दो भागों** में विभक्त करते हैं।

तुकाराम के हिंदी अभंगों में भावपक्ष :

तुकाराम भक्त कवि थे। तुकाराम के अभंगों का बड़ा भाग भक्तिन **अभंगों ने ले लिया है।** हिंदी अभंगों में भी बहुतरो अभंग भक्तिपरक ही है। इन भक्तिपरक **अभंगों ने** भक्त और भगवान के बीच की दूरी ही कम कर दी। तुकाराम ने **अपनाए** हुए वारकरी सांप्रदाय तथा अन्य भक्ति संघटनों ने **ईश्वर और भगवान के** बीच दलाल के रूप में काम करनेवाले तथा **भोलीभाली जनता का** शोषण करनेवाले पुरोहित वर्ग को ही समाप्त **किया।"4) तुकाराम ने** संत कबीर, नामदेव, तुलसीदास, सुरदास का अध्ययन **किया था। उनके** काव्य का प्रभाव तुकाराम की भक्तिपरक रचनाओं पर **दिखाई देता है।**

तुकाराम हिंदी भक्तिकालीन कवियों के समान परमात्मा की एकता पर **जोर देते हैं।** हिंदुओं में देवी–देवताओं की भरमार है। इस बहुदेववाद से **छुटकारा पाने के** लिए तुकाराम ने विठ्ठल को अपना लिया लेकिन उन्होंने **भगवान के** अनेक रूपों का गुणगान किया है। विठ्ठल के साथ–साथ कृष्ण, **राम के प्रति प्रशंसा के** उदगार निकालते हुए लिखते हैं

मेरे राम को नाम जो लेवे बारोंबार।

त्याके पाऊं मेरे तनकी पैजार।।

नंद के कान्हा तो उन्हें बहुत प्रिय है। उनके साथ गोपी बनकर अपने अहंकार रूपी पति को भुलाना चाहते हैं।

आगळ आवो देवजी कान्हा। मैं घरछोडी आहे ह्याना।।

उन्हसुंकळनावेतो भला। खसम अहंकार दादुला।।

सिर्फ राम और कृष्ण ही नहीं तो अल्ला के गुणगान से भी वे पीछे नहीं हटते। उनके अनुसार सब–कुछ अल्ला की देन हैं।

अल्ला देवे अल्ला दिलावे अल्ला दारू अल्ला खलावे।

अल्ला बगर नहीं कोये अन्ना करें सो हि होये।।

तुकाराम की भक्ति–भावना में माधुर्य–भाव की भक्ति का पुट मिलता है। कबीरदास के समान तुकाराम ने आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक वियोग का जो वर्णन किया है, उसमें वैसी ही विरह की तीव्रता दिखाई देती है जैसी माधुर्य–भाव की भक्ति में देखी जाती है। यह सूफी मत का प्रभाव ही है कि लौकिक आत्मा अलौकिक परमात्मा के मिलन के लिए तरसती है। तुकाराम ने इ.स. 1640 के आसपास उस समय के सुप्रसिध्द सूफी संत बाबाजी चैतन्य उर्फ हजरत शेख शाहाबुद्दीन मान्यहाळ जी से स्वप्न में दिक्षा ली थी। 5) तुकाराम की आत्मा ईश्वर मिलन के लिए तड़फती है। उनके बिना रहा नहीं जाता। वह अपना सब कुछ न्योछावर करना चाहते हैं।

हरिबिन रहियाँ न जाए जिहिरा।

कबकी थाडी देखें राहा।।

तुकाराम की भक्तिभावना में नामस्मरण का अत्यधिक महत्व है। ईश्वर से मिलन और आत्मिक शुध्दि के लिए निरंतर नामस्मरण की आवश्यकता है। इस भवसागर से पार जाना है, जन्म–मरण के फेरे से मुक्त होना है तो नामस्मरण के सीवा कोई चारा नहीं। जिस मुख से रामनाम निकलता है उसे मीठी खीर खाने जैसा सौभाग्य प्राप्त होता है। जो मुख हरिनाम लेने से दूर रहता उसके मुख में मिट्टी पड़ जाती है। उसका जन्म व्यर्थ है। तुकाराम लिखते हैं

रामराम कहे रे मन। औरसु नहीं काज।

बहुत उतारे पार। आधे राख तुकाकी लाज।।

राम कहे सोमुख भलारे। खाये खीर खांड।।

हरिबिन मुखमो धूल परी रे‍‌ क्या जनि उस रांड।।

तुकाराम रामनाम के बिना सब सारहीन मानते हैं। रामनाम सब जीवन का फल है। रामनाम लेने में विलंब नही करना चाहिए। घर, मंदिर, झोपड़ी सब व्यर्थ के मोह हैं। न यह शरीर रहेगा न माया-प्रेम, सब नष्ट होनेवाला है।

राम कहो जीवना फल सो ही। करिमजसुं विलंबन पाई।।

कवन का मंदर कवन की झोपरी। एक रामबिन सब हि फुकरी।

कवन की काया कवन की माया। एक रामबिन सब हिजाया।।

कहे तुका सबहि चलनार। एक रामबिन नहिं वो सार ।।4।।

वारकरी संप्रदाय में आचरण की शुध्दता पर बहुत जोर दिया जाता है। संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, जनाबाई, चोखामेळा, सावता माळी आदि सभी कवि आचरण की शुध्दता पर बल देते है। आचरण की शुध्दता के लिए संपूर्ण विकारों का परित्याग करना पड़ता है। विकारों में सबसे घातक विकार होते हैं-धन की लालसा, नारीभोग, माया-मोह। कवि तुकाराम इन विकारों से दूर रहने की बात करते हुए लिखते हैं

लोभी के चित धन बैठे। कामीन चित काम।

माताके चित पुत बैठे। तुकाके मन राम ।।1।।

आचरण की शुध्दता के लिए कुसंगती का त्याग करना आवश्यक होता है। मन में आनेवाले विकार कुसंगती का असर है। संत तुकाराम कहते हैं

तुका संगत तीन्हसे कहिए। जिनथें सुख दुनाये।

दुर्जन तैरागू कालाथ्थीसो प्रेम घटाये।

संत काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जीवन की क्षणभंगुरता। दुनिया संतकाव्य के कवि अतिसंवेदनशील नजर आते हैं। उनका जीवन के प्रति देखने का नजरिया सामान्य लोगों से अलग होता है। मानव जीवन की क्षणिकता का उन्हें पता होता है। तुकाराम के हिंदी अभंगों में सबसे ज्यादा अभंग जीवन की क्षणभंगुरता पर लिखे हुए हैं।

काहे रोवे आगले मरना। गंव्हार तूं भुला आपना द्यय बु.।।

केते मालुम नहीं पडे। नन्हें बडे गये सो ।।

बाप भाईलेखा नहीं। पाछे तूंहिचलनार।

काले बाल सिपत भये। खबर पकडो तुका कहे

तुकाराम की वैराग्य भावना का मुख्य कारण जीवन की क्षणभंगुरता ही है। अकाल के कारण जीवन की नश्वरता का पता पहले ही चला था। करीबी जनों की असमय मृत्यु ने तुकाराम को अंदर से अस्थीर किया। जीवन के प्रति मोह समाप्त हुआ। कवि कहता है

तनजीबन की कोन बराई। व्याधपीडादि स काटहि खाई।।

समाज सुधारक तुकाराम :

तुकाराम के व्यक्तित्व में प्रखर सुधारवादी (प्रोटेस्टंट) प्रवृत्ती भी थी।(66) इस बिंदु पर आकार संत कबीर और संत तुकाराम में समान सुत्र नजर आते है। कबीर ने हिंदू धर्म के मिथ्या आडंबर एवं पाखंड का डटकर विरोध किया, हिंदू-धर्म के ठेकेदार इन पंडितों को कसाई कहकर इनकी पोल खोलना आरंभ किया था उनके कुकर्मों, नीच करतूतों, मिथ्या कृत्यों आदि का उल्लेख करके उन्हें जनता का कट्टर शत्रु घोषित किया था। कबीर के सूर में सूर मिलाते हुए तुकाराम कहते हैं

तीरथ बरत फिरी पाया जोग। नहीं तलमल तुटति भवरोग।।

कहतका मैं ताको दासा। नहीं सिरभार चलावे पासा।।

मोक्ष प्राप्ति के लिए घर-बार छोड़कर सन्यासी बननेवालों को तुकाराम पाखंडी बताते है। संन्यासी बनने के लिए संसार त्यागने की क्या आवश्यकता है? संसार में रहकर, जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए तन के

लोभ का त्याग करना ही सच्चा सन्यास है। काम, क्रोध रूपी संसार का त्याग करो। और इसके लिए शरीर पर राख लगाने की क्या आवश्यकता है? तुकाराम का कहना है

देखत आखों झुटा कोरा। तो काहे छोरा घरबार ।।

मनसं किया चाहिये पाख। उपर खाक पसारा ।।

कामक्रोधसो संसार। वो सिरभार चलावे ।।

कहे तुका सो संन्यास। छोडे आस तनकी हि।।

ऊपर से भगवा वस्त्र पहनने से अंतःकरण हरिमय थोड़े ही होगा? बाहरी तन को धोने से मन शुध्द कैसे होगा?

तुका बस्तर बिचारा क्यों करे रे। अंतर भगवा न होय।

भीतर मैला कॅव मिटे रे। मेरे उपर धोय ।। 1।।

तुकाराम के अनुसार साधु वही है जिसने छे विकारों का त्याग किया। विषय वासना में मन डुबा हुआ है और दिखावे के लिए साधु वेश परिधान किया है। गले में माला, बगल में झोली, हिरण की चमडी, पैरों में पादुका आदि का बोझा लेकर घुमने से ईश्वर प्राप्ति कैसे होगी?

उडे कुदे ढुंग नचावे आगल भूलन प्यार।

लडबड खडबड काहे कांख चलावत भार।।

सांसारिक परेशानियों से उबकर परिवार, रिस्तेदार, पत्नी-बच्चों को छोड़कर सिर मुंडवाकर, संन्यास लेने से तुम्हें कौनसा ज्ञान प्राप्त हुआ? जब-तक इच्छा का मुंडन नहीं होगा तब-तक यह क्रियाएँ व्यर्थ है। तुकाराम के अनुसार

तुका कुटुंब छोरे रे। लरके जोरों सिर गुदाय।

जब थे इच्छा नहिं मुई। तब तूं किया काय ।।

और जब भोगेच्छा नष्ट होगी तो फिर बाल चढाने की, तन पर राख लगाने की क्या आवश्यकता है। इच्छारहित मनुष्य संसार में रहने के बाद भी संसार की व्यर्थ चिंताओं से दूर रहता है। जिसप्रकार दही से मक्खन

निकालकर उसका बनाया हुआ गोला फिरसे छाछ में डाल दिया तो वह छाछ से एकरूप नहीं हो सकता। वे लिखते हैं –

तुका इच्छा मिटाई तो। काहा करे जट खाक।

मधीया गोला डार दिया तो। नहिं मिले फेरन ताक ।।

मठ बनाकर भक्ति का सोंग रचानेवालों को तुकाराम का कहना है:

काहे लकडा घांस कटावे। खोद हिजमीन मठ बनावे ॥ 11 ॥

देवलवासी तस्वरछाया। घरघर माई खपरि बसमाया ।।2।।

अल्ला के नामपर रोना-धोना, सिर पटकना, बाल नोचना, छाती पीटना सब दिखावा है। इससे अल्ला कैसे प्रसन्न होगा? तुकाराम कहते हैं अल्ला सबका सखा है उसकी प्रार्थना मन से करना। मिलबाँट कर खाना खाना।

तिम भज्याय ते बुरा जिकीर करे।

सीर काटेकर कुटे ताहां झडकरे ।।

दिदार देखो भले नहीं किसे पछाने कोये।

सचा नहीं पकड सके झुटा झुटे रोये ।।

तुकाराम समाज को जागृत और होशियार रहने की सलाह देते हुए कहते है कि संभल के रहना। स्वर्ग और नरक दोनों की मार से बचकर रहना है। जो दक्ष होता है वहीं बच जाता है बाकी सब लूटे जाते हैं।

संभाल यारा उपर तलें दोन्हों मारकी चोट।

नजर करे सोही राखे पश्वा जावे लूट ।।

मनुष्य के पतन के पीछे अनेक कारणों में से एक कारण धन-संपत्ति की लालसा और दूसरा कामांधता। इस आसक्ति के कारण लाथ खानी पड़ती है। सम्मान नष्ट होता है। उसका त्याग करो नहीं तो धक्के खाने पड़ेंगे।

दमरी चमरीजो नर भुला। सोत आघोहि लत खाये ।।

कहे तुका उस असा के संग । फिरफिर गोदे खाये ।।

तुकाराम के काव्य में सिर्फ आलोचना ही नहीं तो समाज सुधार की भावना भी विद्यमान है। तुकाराम ने जो भी कहा निडर और निर्भिकता से कहा। उन्होंने ऊँच–नीच भावना का विरोध करते हुए मानव–मात्र की एकता और समानता का पुरस्कार किया।

अधिक याती कुलहीन नहीं ज्यानु।
ज्याणे नारायण सो प्राणी मानूं।।

कवि के अनुसार मिथ्याचारी एवं पाखंडी व्यक्ति भक्ति का सोंग रचता है। कवि ने समाज में व्याप्त वैषम्य का विरोध किया। शुध्द आचरण और सात्विकता पर जोर दिया। धार्मिक पाखंड और सामाजिक कुरीतियों को दूर करके जनसाधारण को सरल–जीवन, सत्याचरण, एकता, समता का संदेश दिया। परिणामतः तुकाराम महाराष्ट्र के साथ सारी मानवता के उच्चकोटी के समाज सुधारक कहे जा सकते है।

तुकाराम की काव्यकला :

तुकाराम एक उच्च कोटि के साधक थे, सत्य के उपासक थे और ज्ञान के अन्वेषक थे। उन्होंने काव्य के लिए काव्य नहीं लिखा। सत्य एवं ज्ञान का निरूपन करना उनका मुख्य उद्देश्य था। तुकाराम को संत नामदेव ने सपने में आकर काव्य करने का आदेश दिया था। 7 तुकाराम से समाज का दुःख देखा नहीं गया इसलिए वे काव्य के माध्यम से उसको जागृत करना चाहते थे। अपनी मधुर वाणी से तुकाराम ने सबको मोह लिया। धीरे–धीरे पास–पड़ोस के संत, कवि, साधु, भक्त, दुःखी लोग तुकाराम का किर्तन सुनने आने लगे। वे संत कवि के रूप में प्रसिध्द हुए। निरंतर सत्कर्म करने के बाद भी उन्होंने सामाजहित ध्यान रखकर धार्मिक, सामाजिक बुराईयों पर प्रहार करना जारी रखा। उनकी लोकप्रियता से तंग आकर तत्कालिक ब्राम्हण समाज ने तुकाराम को यातनाएँ देना आरंभ किया। उनका जीना मुश्किल हुआ। तुकाराम के काव्य में विद्रोह का स्वर प्रखर रूप धारण कर गया था। तुकाराम के काव्य के द्वारा तत्कालिक ब्राम्हण समाज का पाखंड, व्यभिचार, अनाचार, अमानुष शोषण सामने आया। सत्रहवीं शताब्दी के समाज में एक शूद्र का ब्राम्हणों के अधिकार को प्रत्यक्ष

तत्कालना अनसुनी घटना थी। 1645 में तुकाराम को अपने लिखे हुए अभंगों को अपने ही हाथों से नदी में डुबो देना पडा। उन्हें इस घटना का गहरा सदमा लगा। लगातार तेरह दिनों के अनशन के बाद उनके अभंग गाथा के रूप में पाणी के ऊपर तैरते नजर आये। इसी गाथा ने सारे महाराष्ट्र तथा देश के संतों का मार्गदर्शन किया। महाराष्ट्र के देहातों में आज भी वह जाये जाते हैं। मराठी भाषा में उनके अभंगों की पंक्तियाँ बार–बार प्रयुक्त की जाती है।

तुकाराम के अभंगों की आत्मा उनकी भाषा ही है। महाराष्ट्र में जन्मे तुकाराम बहुभाषिक थे। मराठी उनकी मातृभाषा थी। उनके हिंदी भाषा में लिखे अभंगों में दक्खिनी, पंजाब तथा फारसी भाषा के शब्द मिलते हैं। उनकी भाषा बोधगम्य, सरल, सहज और अर्थपूर्ण है। उनके काव्य में बोली के शब्दों का प्रयोग बड़ी मात्रा में होता है। जैसे

उडे कुदे दुंग नचावे आगल भूलन प्यार।
लडबड खडबद्ध काहे काख चलावत भार।।

यहाँ उडे–उड़ना, कुदे–कुदना, दुंग नचावे–पार्श्वभाग नचाना, आगल–अगला, लडबड खडबड–खडावा–लकडी का जुता, हिरन की चमडी, झोली) आदि अर्थ दिए है। कबीर के समान तुकाराम की हिंदी मिश्रित हिंदी है। उनकी मराठी भाषा समृध्द है। हिंदी लिखते वक्त कुछ मर्यादा तो होगी ही। पर हिंदी काव्य भी रस, अलंकार, छंदों से भरा पड़ा है।

तुकाराम अपने अभंगों में उपमा, रूपक, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग करते है। एक उदाहरण देखिए –

तुका प्रीत राम सु। तैसी मिठी राख।
पतंग जाय दिप परे रे। करे तनकी खाक ।।

तुकाराम के अभंगों में गेयता और संगीतात्मता विशेश रूप में दिखाई देती है।

भक्तिकालीन मराठी कवियों में तुकाराम का स्थान अद्वितीय है। उनका गत तीन शताब्दियों से मराठी समाज के मन पर अधिराज्य रहा है। गाँवों में फैली अनपढ़ जनता को भगवान के स्वरूप से रूबरू करानेवाले तुकाराम

वारकरी संप्रदाय के शिखर पुरूष है। आज तक प्रत्येक पीढि उनके अभंग गाती आयी है। उनके काव्य पर शेकडों अनुसंधान और शोध-पत्र लिखे गए। बदलती सामाजिक और धार्मिक अवस्था में वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना सोलवी-सत्रवी शताब्दी में था। युध्दसदृश्य स्थिती में पाखंडी सवर्ण मानसीकता से वे लगातार लड़ते रहे। उनको अनेक यातनाओं का सामना करना पडा। उतार-चढाव से भरा उनका जीवन निराश मानवता को जीने का नया संदेश देता है। उनका समाज सुधार का कार्य कबीर की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए नजर आता है। उनके काव्य को किसी कागज और मसी की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उनका काव्य ग्रामीण, अनपढ, भोलीभाली जनता के मुख में, दिमाग में, ह्यदय में हमेशा से वास करता आया है। तुकाराम की गाथा इतनी सजीव है कि किसी भी वक्त, किसी भी स्थान किसी भी समारोह में सामिल हो जाती है। खेती करता किसान, भजन करता भक्त, भाषण देता वक्ता, कक्षा में पढ़ाता शिक्षक, चौराहे पर चर्चा करता सामान्यजन, शादी-ब्याह, विद्वतजनों का चर्चासत्र और एकांत में लिखता लेखक वे सब तुका के अभंग लेकर घुमते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनका इस्तेमाल भी करते हैं। अपना इहलोक का कार्य पुरा होने पर वे अंर्तधान हो गये।

तुकाराम के अभंगों की मूल प्रतियों नहीं मिली है। उनके सभी अभंग मौखिक रूप में जीवित थे। उनमें मराठी अभंगों की संख्या बहुत बड़ी है। हिंदी अभंगों की संख्या भी बहुत होगी लेकिन महाराष्ट्र की भाषा मराठी होने से और उनके भक्त मराठी भाषक होने के कारण उनके मराठी अभंग ज्यादा मिले हैं। हिंदी भाषा के अभंगों को मराठी भक्त याद नही कर सके होंगे। वास्तव में सभी मराठी अभंग प्राप्त नहीं हो सके तो हिंदी कैसे मिलेंगे? पता नहीं उनकी मूल प्रतियाँ कैसे गायब हुई। अगर सोच-समझकर किसी ने उनका काव्य नष्ट किया हो तो कैसे मिल सकता है। खुद उनके मृत्यु पर भी सवाल उठाये जाते हैं। कोई अचानक गायब कैसे हो सकता है? पुष्पक विमान आदि बातें मनगढंत ही जान पड़ती है। कुछ लोग उनकी हत्या होने की आशंका जताते हैं, लेकिन गायब (जिसे अंतर्धान कहा जाता है) होने से पहले उन्होंने अपने अभंगों में इहलोक छोडने की बात कही है। या तो वे सबकुछ त्यागकर जाना चाहते थे या वे अभंग ही प्रक्षिप्त कहे जा सकते हैं। एक स्थान पर(10) कहा गया है कि वे समाधी लेना चाहते थे लेकिन इसके

अच्छा मार्ग था सब त्याग दूर देश चले जाना। वे सबकुछ त्यागकर वाराणसी (काशी) चले गए। कुछ भी हो उनकी मृत्यु अनसुलझा या गुढ़ प्रश्न है।

भाव और भाषा का सुंदर संगम तुकाराम के अभंगों में देखने को मिलता है। अंत में तुकाराम के बारे में इतना ही कह सकते हैं। अपने लिए उन्होंने ऐहिक और दिव्य जीवन की सीमाओं को मिटा दिया और वे कालातीत हो गये । (11)

संदर्भ

1. संत एकनाथ व संत तुकाराम : तौलनिक अध्ययन, डॉ. दिवाकर इंगोले, सुविद्या प्रकाशन, पुणे पृष्ठ क्र. 217.
2. तुकाराम गाथा, सं.भालचंद्र नेमाडे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली. पृष्ठ 13(5) तुकाराम, संभालचंद्र नेमाडे अनु चंद्रकांत पाटील, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ 44.
3. तुकाराम गाथा संभालचंद्र नेमाडे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली. पृष्ठ 8
4. तुकाराम गाथा संभालचंद्र नेमाडे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ 12
5. तुकाराम, संभालचंद्र नेमाडे, अनु चंद्रकांत पाटील, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ 521
6. तुकाराम गाथा, सं. भालचंद्र नेमाडे साहित्य अकादमी, नई दिल्ली. पृष्ठ 80 तुकाराम, सं. भालचंद्र नेमाडे अनु चंद्रकांत पाटील, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ 37.
7. सार्थ तुकारामाची गाथा, सं. डॉ. गोपाळराव वेणारे, सरस्वती ग्रंथ भंडार पुणे, पृष्ठ 900
8. सार्थ तुकारामाची गाथा, सं.डॉ. गोपाळराव वेणारे, सरस्वती ग्रंथ भंडार, पुणे, पृष्ठ 13
9. तुकाराम, संभालचंद्र नेमाडे, अनु चंद्रकांत पाटील, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ 64.